mardi 9 avril 2013

HIN2B09b

(Compréhension de l'écrit)

Cours –10

समाज सेवा की चुनौतियां - इंदिरा मिश्र

समाज सेवा के प्रति समझदार लोगों का हमेशा रुझान होता है। किंतु अक्सर वे समझ नहीं पाते कि किस क्षेत्र में समाज सेवा करें। समाज में अमीरों की भी समस्याएं हैं- अहम् भाव, भावनाओं को न समझ पाना, दूसरों को हेय समझना, हर चीज का मूल्य पैसे से लगाना, अपनी मनपसन्द गतिविधियों में समय न लगा पाना, पैसे अथवा जायदाद की वजह से गृह-कलह, विवाद, नशा तथा मनमुटाव व भावनात्मक आघात, रोग आदि। समाज में गरीबों की समस्याओं को सभी समझते हैं। इसके अलावा समाज में निरक्षरता, कुपोषण, दुर्बलता, अपंगता, अनाथ बच्चों की उपस्थिति, गंदगी, स्थानाभाव, आधारभूत सुविधाओं या अधोसंरचना का अभाव, प्रतिस्पर्धा, धोखाधड़ी, जड़ता रोग तथा अपरिवर्तनशीलता ये सभी मौजूद हैं। अमीर-गरीब के बीच बढ़ती हुई खाई भी मौजूद है। लोग चुनाव नहीं कर पाते, कि वे किस क्षेत्र में सेवा करें ताकि नतीजे भी मिले, और स्वयं को भी वे बहुत कष्ट न दें। इसी ऊहापोह में पूरा जीवन गुजर जाता है और अंत में यह स्थिति बनती है, कि न खुदा ही मिला, न विशाले-सनम, और जब वे संसार से विदा होते है, तो उनकी प्रशंसा में गीत गाने वाले कम ही बचते हैं। गीतों के विषय भी अमूमन होते ही नहीं कि जिसे उनकी विशेषता या उपलब्धि बताया जा सके।

समाज सेवा में व्यक्ति यश की चिंता को भूलकर, सदा-सर्वदा के लिए किसी अच्छे काम में तल्लीन हो सकता है। लेकिन समाज सेवा शुरू करने के पहले व्यक्ति को अपने आप में यह दृढ़ता से समझ लेना पड़ता है कि वह जिस क्षेत्र में समाज सेवा करेगा, वह क्षेत्र लोगों को सचमुच में लाभान्वित करेगा। साथ ही, यह भी कि वह इस क्षेत्र से, सच्ची सेवा भावना की वजह से जुड़ा है, पैसा कमाने की नीयत से नहीं। व्यापक पैमाने पर समाज सेवा करने के लिए, बड़े स्रोतों से सेवा कार्य के लिए धन आकर्षित करना पड़ता है। इसके लिए एक संस्था का गठन जरूरी होता है। संस्थापक को इसके लिए नियम बनाने होते हैं तथा अपने जैसे विचार रखने वाले, कम से कम, कुल सात व्यक्तियों के समूह को जोड़कर संस्था के उद्देश्यों, कार्यक्रमों, धन के स्रोतों तथा अन्य औपचारिकताओं के बाबत् स्पष्टोक्तियां देकर एक संस्था सोसाइटियों के रजिस्ट्रार के पास पंजीकृत करानी होती है। सरकारी स्रोत से नई-नई संस्था को धन नहीं मिलता। संस्था को कम से कम 3 वर्ष तक अपने पैसे से कार्यक्रम चलाने पड़ते हैं।

सच्चाई तो यह है कि सरकारी स्रोत से पैसा लेना एक दुरूह कार्य है। सरकारी योजनाओं में लाल-फीताशाही, ईर्ष्या, आलस्य, भ्रष्टाचार का बोलबाला समाजसेवी की कमर तोड़ डालता है। ऊपर से उसे समय सारिणी के अनुसार अपना काम पूरा करके उपयोगिता प्रमाण पत्र देना होता है। उसे काम का सामाजिक अंकेक्षण एवं सामान्य ऑडिट कराना होता है। उसे काम करने वाला स्टाफ रख कर उससे काम लेना होता है। सरकारी योजनाओं में अक्सर स्टाफ के लिए कुछ भी वेतन नहीं निर्धारित होता। उसका जुगाड़ संस्था स्वयं करती है, अत: कम वेतन पर ही स्टाफ काम करता दिखाई देता है। कहने का तात्पर्य यह है, कि समाजसेवी को सरकार से बाहर भी अपने कार्य के लिए साधन ढूंढने होते हैं, बल्कि शुरू में तो उसे अपनी बचत, अपने पास उपलब्ध संसाधन, जगह, मित्र-वर्ग के सहयोग या सदस्यों के अवदान से काम को चलाना होता है। एक बार शुरू करने के बाद काम को रोक देना या बंद कर देना भी अच्छा संदेश नहीं देता। इसलिए योजना को किंचित विस्तार से कागज पर उतार कर, आगा-पीछा सोच कर कार्य शुरू किया जाता है।

जहां चाह वहां राह: यह उक्ति यहां भी कारगर होती है। मेरी मित्र साधना ने अपने पास पड़ोस के झुग्गी-बस्ती के बच्चों को अपने घर के पोर्च में रोज पढ़ाना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे करके उनके पास आने वाले बच्चों की संख्या खूब बढ़ गई। ये बच्चे निर्धारित समय से पहले ही उनके घर पहुंच कर बड़े उत्साह से उनके आने का इंतजार करते हैं। वैसे साधना स्वयं बी.ए., एम.ए. ही नहीं, बल्कि पी.एच.डी. हैं। लेकिन वे पेड़ खजूर नहीं है कि इन जरूरतमंद बच्चों को अपनी शिक्षा का लाभ देने से कतराएं।

मेरी एक अन्य मित्र डॉ. लीला फाटक ग्वालियर में झुग्गी-बस्ती के बच्चों को भारत की संस्कृति की परिचायक, पुरानी कहानियां सुनाती थीं। उनके माध्यम से पंचतंत्र, रामायण, महाभारत, उपनिषद, ऋषि मुनियों आदि की बातों से सहज ही इन बच्चों का परिचय हो गया अन्यथा दरिद्र तथा अनपढ़ परिवारों के इन बच्चों को हमारे महाकाव्यों के धीरोदात्त नायकों के आदर्श पात्र कहां समझने को मिलते? डॉ. फाटक चिरकुमारी थीं तथा गांधी नेहरू युग से प्राप्त प्रेरणा के बल पर काम करती थीं। वे कभी केन्द्र सरकार में वाइंट कमिश्नर हेल्थ थीं। बड़ी जीवन्त व असरदार महिला थीं। उनसे सब थर्राते थे। उनके जीवन का यह भी एक कोमल पहलू था कि उन्होंने इन बच्चों को संस्कारवान बनाया।

बम्बई की प्रेमा ताई: अन्नपूर्णा महिला मंडल की दबंग सचिव श्रीमती प्रेमा पुराव भी ऐसी ही थीं। वे शराब के विरुद्ध झुग्गी बस्ती की महिलाओं को समझाइश देती थीं। वे कहती थीं कि तुम महिलाएं स्वयं सहायता समूह बनाओ। जिस भी घर में किसी महिला का पति शराब के लिए घर में झगड़ा-फसाद करे, या अपनी पत्नी को मारे, वहीं शोर सुनकर तुम सब पहुंच जाया करो, और उस पुरुष का वह हाल करो, कि वह सब पीना-पिलाना भूल जाए। एक बार प्रेमा ताई को रात के वक्त फोन आया, कि झुग्गी बस्ती में एक घर का पुरुष चाकू लेकर अपनी स्त्री को मारने पर आमादा है। प्रेमा ताई तुरंत वहां पहुंची। उस व्यक्ति ने कहा, तुम सामने से हट जाओ। ताई नहीं हटीं। तब उस व्यक्ति ने चाकू मारकर प्रेमा ताई को लहूलुहान कर दिया। पुलिस आई, वह व्यक्ति जेल गया। बस्ती में शांति छा गई। प्रेमा ताई के हाथ पर आज भी वही निशान है। मुझे उन पर गर्व है।

एक बार फिर यह बात कहनी पड़ती है कि समाज सेवा के लिए एक जस्बा होना चाहिए फिर साधन अपने आप मिलते जाते हैं।

mardi 9 avril 2013

Vocabulaire et expressions

प्रति envers, copie
समझदार sage, celui qui comprend
रुझान-m tendance, inclinaison
अक्सर souvent
अहम् भाव égoisme,
हेय समझना
मूल्य पैसे से लगाना
évaluer en termes d'argent
मनपसन्द préféré, favori
गतिविधि-f activité
जायदाद-f biens
गृह-कलह-f conflit domestique
आघात-m frappe
निरक्षरता-f analphabétisme
कुपोषण-m malnutrition
दुर्बलता-f faiblesse
अपंगता-f invalidité, handicap
अनाथ-m orphelin
स्थान-m + अभाव-m manque d'espace
आधारभूत सुविधा services de base
अधोसंरचना-f infrastructure
प्रतिस्पर्धा-f compétition
धोखाधड़ी-f arnaque
जड़ता-f inertie, stupeur
अपरिवर्तनशीलता-f
résistance au changement
नतीजा-m résultat
ऊहापोह-f dilème
न खुदा ही मिला, न विशाले-सनम
Ne trouver ni Dieu, ne ce qu'on aime
(dicton) tout perdre
विदा होना prendre congé
अमूमन souvent, de manière générale
यश-m célébrité, réputation
सदा-सर्वदा toujours, continu
तल्लीन plongé, immergé
दृढ़ता-f fermeté, solidité
लाभान्वित होना avoir le bénéfice
नीयत-f intention, motivation
व्यापक global
पैमाना–m mesure, règle
गठन-m constitution de qqch.
संस्थापक-m fondateur
उद्देश्य-m objectif
औपचारिकता-f formalité
बाबत concernant
स्पष्टोक्ति ce qui est dit clairement
पंजीकृत enregistré
दुरूह obscure, incompréhensible
लाल-फीताशाही-f paperasserie
ईर्ष्या-f jalousie
आलस्य-m paresse
X का बोलबाला-m importance,
suprématie de X
समाजसेवी-m volontaire social
कमर तोड़ना rendre invalide
(casser le dos)
समय सारिणी horaires, calendrier
अंकेक्षण-m audit
वेतन-m salaire, rémunération
निर्धारित déterminé
जुगाड़-m astuce, débrouillardise
तात्पर्य-m sens
बचत-f épargne
अवदान-m œuvre importante, réussite
किंचित peu
आगा-पीछा devant derrière
जहाँ चाह वहाँ राह
quand on veut, on peut
उक्ति-f dicton
कारगर होना réussir, être efficace
साधना-f (prénom) ascèse, maitriser (verbe)
झुग्गी-बस्ती bondonville
जरूरतमंद-m nécéciteux
कतराना éviter
परिचायक-m ce qui présent, trait
माध्यम-m moyen
अन्यथा sinon
दरिद्र-m pauvre
अनपढ़ analphabète
महाकाव्य-m épopée
धीर calme + उदात्त chevaleresque
आदर्श-m idéal
पात्र-m personnage
प्रेरणा-f inspiration
बल-m force
जीवन्त vivant
थर्राना trembler
कोमल doux
पहलू-m aspect
संस्कारवान ayant (hérité) bon caractère
दबंग-m dominant, affirmé, petite brute
सचिव-m secrétaire
X के विरुद्ध contre X
समझाईश-f compréhension
समूह-m groupe
हाल करना (punir) mettre en mauvais état
मारने पर आमादा prêt à mourrir
लहूलुहान करना blesser (ensanglanté)
निशान-m marque, signe
किसी पर गर्व होना être fier de quelqu'un
जस्बा-m courage

Questions - Répondre a des questions suivantes en français

Quels sont les problèmes de la société ?
Pourquoi est-il difficile de prendre l'argent du gouvernement?
Quel est le problème des fonctionaires ?
Quels sont les problèmes des structures sociales ?
Quel est l'example de « quand on veut, on peut » ?
Quelle est la stratégie à adopter pour des maris qui boivent ?
Pour servir la société, que faut-il avoir?